6. मेघराज मुकुल" imp कृपलानी

1. माटी मुलकी बीज पसीज्या"

इस कविता के अन्तर्गत कवि ने व्यक्ति को समय रहते जाग जाने का आह्वान किया है क्योंकि सही समय पर व्यक्ति उठ जाता है और अपने कर्म मे लग जाता है तभी उसका जीवन सफल होता है अन्यथा व्यर्थ सोने से जीवन नष्ट हो जाता है व्यक्ति मेहनत करके धरती पर हल चलाकर बीज बोता है और जब उसकी मेहनत का फल खेतों की हरियाली में लहराता है तो यह देख किसान का मन खिल उठता है और किसान निरन्तर अच्छे फल की आशा मे मेहनत करता है जबकि काले और निठले लोग केवल बातों मे ही या सोने में अपना समय गंवाते है जिसके कारण ऐसे लोगों का जीवन असफल और सकटमय हो जाता है ऐसे लोगों को अच्छा समय भी दुख रूप में दिखाई देता है अच्छा समय बेकार की बातों मे गवाने के कारण बुरा समय और अधिक दुखमय और कष्टमय हो जाता है और ऐसे कष्टों मे भी व्यक्ति अपनी द्वेष बुरी भावनाओं से एक दुसरे के साथ झगड़ा करते है और उसी में अपना आनन्द मानते हैं जो कि उनकी विफलता का प्रतीक है कवि ऐसे लोगो को कविता के माध्यम से सचेत करना चाहता है कि अच्छे कर्मों का फल सुखदायी जनकल्याणकारी होता है और व्यक्ति समाज के विकास के मार्ग पर ले जाता है बुरे कर्मो का फल सदैव बुरा ही होता है आज के इस युग मे अच्छे लोगों की कमी व बुरे लोगो का बोलबाला है

जो दुसरो से कार्य करवाते है, तीन महिनो का मजदुरी के माध्यम से खुन चुसते है या अपने मतलब का कार्य करवाते है। कम देकर अधिक जताने का प्रयास करते है। और माया मोह के चक्कर में व्यक्ति. व्यक्ति को भूले जा रहा है। जो कि आज के समय में गलत है कवि ऐसे लोगों का विरोध करता है। अच्छे लोगों को सदैव आगे बढते रहने की प्रेरणा देता है और शान्ति में ही सुख है और कर्म ही उसकी प्रधानता है। कर्म पथ पर चलते रहने की प्रेरणा देता है। व्यक्ति को सुख के पीछे भागने की आवश्यकता नही है। व्यक्ति को सदैव कार्य करते रहना चाहिये।

लेकिन आज के समय मे मेहनत करने वालों लोगों की जमात जमा है जो बिना काम किये सदैव सुख पाने की लालसा में लगे रहते है लेकिन उनको प्राप्त होने वाला सुख चन्द दिनों का ही होता है। व उसके पश्चात अपनी कार्य शैली के कारण दुखी होना पड़ता है। इसलिये मनुष्य को सदैव सुखी रहने हेतु मेहनत-मजुरी करके ही अपने परिवार का पेट पालना चाहिये गलत काम करके व्यक्ति की आत्मा स्वतः ही उसे खोसती है। ऐसे में व्यक्ति को अपनी आत्मा की की बात सुनकर प्रगति के पथ पर चलना चाहिये तभी व्यक्ति के जीवन में सुख का सूरज खुशियों की किरणों को बिखरेगा। सुख के अंधकार मे व्यक्ति नशे का आदि हो जाता है।

Scanned by CamScanner

व्यक्ति को इन नशो को छोड़कर कार्यकारणी. मेहनत के नशे को करना चाहिए। जिससे उसे सुख ही मिलेगा। सुख को तो हर कोई पहचान सकता है।

लेकिन तन मन के दृश्य को तो केवल वो ही पहचान सकता है जिसने स्वयं उस स्थिति में रहकर दुख को भुगता है। इसलिये कवि चाहता है कि व्यक्ति एक दूसरे के सुख को समझे व सुख को लाने का सार्थक प्रयास करे तभी जीवन, समाज, परिवार व देश प्रगति कर सकता है। इसके साथ ही मेहनत मजदुरी करने वाले को उसका हक व नाम मिलना चाहिये। यदि ये सब कुछ हो जाता है यदि मानव की भावना में परिवर्तन व मेहनत व विश्वास ही उसका लक्ष्य होता है तो सुख व लक्ष्मी स्वयं चलकर उसके घर बार बढाती है। उसे सुख के पीछे नही भागना पडता है। वरन सुख उसके साथ रहता है।

" 2. छिया तावड़ो "

कवि ने भाव अभिव्यक्त किया है कि कृषक जब अपने खेतों में मेहनत करता है तब खुशहाली और सुख सहज चल कर आता है। यदि कृषक धरती मे हल चलाकर बीज को बोता है तो यही बीज समय आने पर अंकुरीत होकर पल्लवित होता है चारों तरफ हरियाली हो जाती है और सुखी धरती पुनः नया रूप धारण कर लेती है। यदि सभी व्यक्ति किसानों की तरह कार्य करने लग

जाएंगे तो धरती स्वतः स्वर्ग बन जाती है।
लेकिन यहां पर तो निठल्ले लोगों की भरमार है जो
ठाले रहते हैं और कार्य नहीं करते इसी वजह
से ही, इस देश की नींव में धीरे-धीरे कमी
आने लगती है।
आज के समय में खाली व्यक्ति
का दिमाग खुराफात और इस खुराफात के ही कारण
मजदूरी कर पसीना नहीं बहाना चाहता है और
जिसके कारण ही देश व समाज में विकास की कमी
और इस कारण ही जो व्यक्ति कार्य करना चाहता है
उसके भीतर कार्य करने की आशा खत्म हो जाती
है इसलिये व्यक्ति को सदैव आशा और उमंग
को जाग्रत करते रहना चाहिये यदि जाग्रत रहे तो
स्वतः खुशहाली आएगी कवि का मानना है कि
युवा पीढ़ी समय के साथ-साथ नशे के गिरफ्त
में बन्धी जा रहे हैं। जिसके कारण कार्य क्षमता
और शरीर क्षीण होता जा रहा है इसलिये व्यक्ति
को या युवाओं को नशे से दूर रहना चाहिए।
यदि समय रहते मनुष्य नहीं चेता तो धीरे-धीरे
उसका और समाज का ह्रास हो जाएगा। और
सुख का स्वरूप है जो धीरे-धीरे दुःख में
परिवर्तन हो जाएगा। यदि व्यक्ति हिम्मत और मेहनत
से काम करे तो ऐसा कौन सा कार्य है जो नहीं कर
सकता। सभी कार्य कर सकता है महल बना
सकता है, अमीरी गरीबी मिटा सकता है इसलिये व्यक्ति
में इच्छा शक्ति और प्रबल भावना हो तभी सुखी
रह सकता है।

तब पाबुजी वचन पालन के निमित विवाह को वही छोड़कर तुरन्त देवलचारणी के गायो की रक्षा के लिए केसरकालवी घोडी पर चल देते है। सोढी व उसके परिवार वाले मनाने का बहुत प्रयास करते है लेकिन वे प्रयास वचन बद्धता के आगे सफल नही होते है। पाबुजी चले जाते है पुरा परिवार व सोढी पाबुजी के लिये रोते रह जाते है।

इस प्रकार कवि ने वचन पालन के साथ सयोंग व वियोंग का चित्रण करने का सफल प्रयत्न किया है।

Scanned by CamScanner